NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

अंजीर की वैज्ञानिक खेती

राधा, कौशल कुमार एवं डॉ. अतुल यादव

परिचय:-

वानस्पतिक नाम: "***फ़िकस कैरिका***", प्रजाति फ़िकस, जाति कैरिका, कुल मोरेसी) एक वृक्ष का फल है जो पक जाने पर गिर जाता है। पके फल को लोग खाते हैं। सुखाया फल बिकता है। सूखे फल को टुकड़े-टुकड़े करके या पीसकर दूध और चीनी के साथ खाते हैं। यह बहुत ही लाभकारी फल है। इसका जैम (फलों के टुकड़ों का मुरब्बा) भी बनाया जाता है। भारत में अंजीर की खेती व्यापारिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण खेती है। बाज़ार में अंजीर के फल की अच्छी कीमत मिलने के कारण इसकी खेती करने से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। अंजीर का फल अपने स्वास्थ्यवर्धक गुणों के लिए भी जाना जाता है।

अंजीर के फल में अनेक प्रकार के पोषक तत्व विटामिन ए, विटामिन बी, विटामिन सी, फाइबर और कैल्शियम पाये जाते है। इसके फल का सेवन ताजा व फल को सुखाकर कर सकते हैं। अंजीर के फल का सेवन करने से सर्दी-जुकाम, दमा, स्तन कैंसर और अपच और मधुमेह जैसी बीमारियों में काफी राहत मिलती है। अंजीर के फलों का उपयोग आयुर्वेदिक दवाइयों को बनाने में भी किया जाता है। भारत में अंजीर की खेती करने वाले प्रमुख राज्यों में महाराष्ट्र का पहला स्थान हैं। महाराष्ट्र में व्यापारिक दृष्टि से अंजीर की खेती की जाती हैं। महाराष्ट्र के अलावा अंजीर की खेती तमिलनाडु, कर्नाटक, गुजरात के अलावा उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में की जाती है।

अंजीर की उन्नत किस्में

मार्शलीज अंजीर

राधा[1], कौशल कुमार[2] एवं डॉ. अतुल यादव[3]

[1]शोध छात्रा, फल विज्ञान विभाग, आचार्य नरेंद्रदेव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या

[2]शोध छात्र, फल विज्ञान विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी

[3]सहायक प्राध्यापक, फल विज्ञान विभाग, आचार्य नरेंद्रदेव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या

अंजीर के पौधे की हाइब्रिड किस्म है। इसके फल का भंडारण अधिक समय तक किया जा सकता है। इसके पौधे की लंबाई 3 से 5 मीटर तक की होती है। मार्शलीज अंजीर के प्रत्येक पौधे से 1 वर्ष में 20 से 25 किलोग्राम तक फल प्राप्त हो सकते हैं।

पुणे अंजीर

पुणे अंजीर का फल आकार में मध्यम और पीले रंग के होते हैं। इसके पौधे 35 डिग्री से 40 डिग्री तक के तापमान में अच्छी बढ़ोतरी करते हैं। पौधे की ऊंचाई 8 फीट और चौड़ाई 2.5 मीटर तक होती है। पुणे अंजीर के पौधो 1 वर्ष की आयु पूरी करते ही फल देना शुरु कर देते हैं।

पंजाब अंजीर

पंजाब अंजीर किस्म के फल आकार में बड़े और पीले रंग के होते हैं। इसके पौधे समान्यत: 2 साल बाद फल देना शुरू कर देते हैं। पौधे की लंबाई 10 से 15 फीट की होती हैं। 5 वर्ष के पौधे की औसतन पैदावार 15 से 18 किलोग्राम तक प्राप्त हो सकती है।

पुणेरी अंजीर

पुणेरी अंजीर किस्म के फल स्वादिष्ट और जामुनी रंग के होते हैं। इसके पौधे की ऊंचाई 8 से 12 फीट तक होती है। एक पौधे से 1 वर्ष में 21 से 25 किलोग्राम तक फल प्राप्त हो सकते हैं।

भारत में अंजीर की कई किस्में उगाई जाती हैं। ये किस्में अपने स्वाद, बनावट और रंग के मामले में अलग-अलग होती हैं। यहाँ भारत में सबसे लोकप्रिय अंजीर की कुछ किस्में हैं:

काला: काला अंजीर एक लोकप्रिय किस्म है जिसकी खेती महाराष्ट्र और कर्नाटक राज्यों में की जाती है। ये अंजीर आकार में छोटे होते हैं और पकने पर गहरे बैंगनी रंग के होते हैं। काला अंजीर का स्वाद मीठा और तीखा होता है और इसका इस्तेमाल आम तौर पर जैम और प्रिजर्व बनाने के लिए किया जाता है।

पूना: पूना अंजीर एक लोकप्रिय किस्म है जिसकी खेती महाराष्ट्र राज्य में की जाती है। ये अंजीर मध्यम आकार के होते हैं और पकने पर हरे-पीले रंग के होते हैं। पूना अंजीर में मीठा और रसदार स्वाद होता है और आमतौर पर इसका इस्तेमाल मिठाई और स्मूदी बनाने के लिए किया जाता है।

दिनकर: दिनकर अंजीर एक लोकप्रिय किस्म है जिसकी खेती गुजरात राज्य में की जाती है। ये अंजीर आकार में छोटे होते हैं और पकने पर लाल-भूरे रंग के होते हैं। दिनकर अंजीर में मीठा और अखरोट जैसा स्वाद होता है और आमतौर पर अचार और चटनी बनाने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है।

टर्की: टर्की अंजीर एक लोकप्रिय किस्म है जिसे भारत में टर्की और ईरान जैसे देशों से आयात किया जाता है। ये अंजीर आकार में बड़े होते हैं और पकने पर पीले-हरे रंग के होते हैं। टर्की अंजीर

की बनावट मीठी और चबाने लायक होती है और आमतौर पर मिठाई और बेक्ड सामान बनाने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है।

जलवायु और मिट्टी

अंजीर की खेती करने के लिए शुष्क और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। अंजीर की खेती करने के लिए अच्छी जल निकासी वाली उपजाऊ दोमट भूमि की जरूरत होती है। अंजीर की खेती के लिए 6 से 7 पीएच मान वाली मिट्टी अच्छी मानी जाती है। अंजीर के फल की अच्छी पैदावार पाने के लिए 25 से 35 डिग्री तक का तापमान उपयुक्त होता है।

खेत की तैयारी

अंजीर की खेती में भुरभुरी मिट्टी की आवश्यकता होती हैं। सबसे पहले खेत से फसलों के अवशेष हटाने के लिए कल्टीवेटर की मदद से खेत की 2 से 3 बार तिरछी जुताई करके फसल अवशेष को हटा लें। इसके बाद खेत की मिट्टी को रोटावेटर की मदद से भुरभुरी बना लें। उसके बाद खेत को पाटा लगाकर समतल बना लें। इसके बाद 5-5 मीटर की दूरी पर गढ्ढे बना लें। इन गड्ढों में अंजीर के पौधे की रोपाई के बाद हल्की सिंचाई कर दें।

बुआई और बीज की मात्रा

अंजीर के पौधों की रोपाई के लिए बारिश का मौसम जुलाई से अगस्त का महीना सबसे उपयुक्त होता है। सबसे पहले आप अंजीर के पौधें की नर्सरी तैयार कर लें या आप अपने पास की नर्सरी से उन्नत किस्म का पौधा खरीद सकते हैं। एक हेक्टेयर में करीब 250 पोधों की जरूरत होती है। एक पौधे से दूसरे पौधे के बीच की दूरी 5 मीटर रखें।

पौधे की सिंचाई

अंजीर की खेती में पौधे की सिंचाई मौसम के चक्र के अनुसार होती हैं। अगर आपने बारिश के मौसम समानतयः जुलाई व अगस्त में लगाया है, तो आपको सिंचाई की जरुरत कम ही पड़ेगी। सर्दियों के मौसम में 14 से 20 दिन के अंतराल में सिंचाई करनी चाहिए। गर्मियों के मौसम में अंजीर के पौधों को अधिक सिंचाई की जरुरत होती हैं, गर्मियों में अंजीर के पौधों की सप्ताह में दो बार सिंचाई कर देनी चाहिए। जबकि बारिश के मौसम में इसके पौधों को सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन अगर समय पर बारिश न हो तो पौधों की आवश्यकता अनुसार सिंचाई करनी चाहिए।

मल्चिंग

मल्चिंग पौधों को लगाने में भी फायदेमंद हो सकती है। मल्च मिट्टी में नमी बनाए रखने, खरपतवार की वृद्धि को रोकने और मिट्टी के तापमान को नियंत्रित करने में मदद करता है। कटे हुए पत्ते, पुआल या छाल जैसे ऑर्गेनिक मल्च का इस्तेमाल आमतौर पर बागवानी और भूनिर्माण परियोजनाओं में किया जाता है।

पौधे की देखभाल

अंजीर के पौधों से अधिक फल का उत्पादन प्राप्त करने के लिए पौधे की देखभाल करना काफी जरूरी होता है। अंजीर के पौधे की अच्छी बढ़वार होने के लिए पौधों को खेत में लगाने के एक साल बाद उनकी छटाई कर दें। पौधों की पहली छटाई के दौरान पौधों पर 1 मीटर की ऊंचाई तक कोई भी नई शाखा ना बनने दे। इसके अलावा इसकी अधिक लंबी बढ़ने वाली शाखा की कटाई कर दें। ताकि पौधे में नई शाखा लगे और पौधा धना हो जाए, पौधे के धने होने से पैदावार में बढ़ोतरी होती है। अंजीर के पौधों की छटाई फल आने शुरू होने के बाद हर साल गर्मियों के मौसम में करना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

अंजीर की खेती में खरपतवार होने की स्थिति में निराई-गुड़ाई करने की आवश्यकता होती हैं। इसीलिए आप को जब भी अंजीर के खेतों में खरपतवार दिखे उसे निराई करके निकाल दे। सामान्यत: अंजीर की खेती में दो निराई-गुड़ाई करना पर्याप्त होता है।

अंजीर की खेती में उर्वरक:

- अंजीर की खेती में स्वस्थ विकास और फल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए उर्वरक आवश्यक है। अंजीर के पेड़ों को खाद देने का सबसे अच्छा तरीका गाय के गोबर, खाद या वर्मीकम्पोस्ट जैसे जैविक उर्वरकों का उपयोग करना है। इन जैविक उर्वरकों में आवश्यक पोषक तत्व होते हैं जो अंजीर के पेड़ों को स्वस्थ बढ़ने और उच्च गुणवत्ता वाले फल पैदा करने के लिए आवश्यक होते हैं।
- अंजीर के पेड़ों को साल में दो बार खाद देना चाहिए - एक बार वसंत में और एक बार पतझड़ में। वसंत के दौरान, स्वस्थ पत्ती विकास को बढ़ावा देने के लिए नाइट्रोजन युक्त उर्वरक का उपयोग किया जाना चाहिए। पतझड़ में, फलों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए पोटेशियम युक्त उर्वरक का उपयोग किया जाना चाहिए।
- अंजीर के पेड़ों पर उर्वरक डालते समय, ध्यान रखें कि बहुत ज़्यादा उर्वरक न डालें। ज़्यादा उर्वरक डालने से वनस्पतियों की अत्यधिक वृद्धि हो सकती है, जिससे फलों का उत्पादन कम हो सकता है। निर्माता के निर्देशों के अनुसार अनुशंसित खुराक और आवेदन की आवृत्ति का पालन करने की सलाह दी जाती है।

अंजीर की खेती में कीट नियंत्रण:

- अंजीर के पेड़ कई तरह के कीटों के प्रति संवेदनशील होते हैं जो पेड़ों को काफी नुकसान पहुंचा सकते हैं और फलों की पैदावार को कम कर सकते हैं। भारत में अंजीर के पेड़ों को प्रभावित करने वाले आम कीटों में अंजीर **फल मक्खी, मीलीबग और स्केल कीट** शामिल हैं।
- अंजीर फल मक्खी एक गंभीर कीट है जो अंजीर के फल को काफी नुकसान पहुंचा

सकती है। मक्खियाँ फल में अंडे देती हैं, और लार्वा गूदे को खाते हैं, जिससे फल सड़ जाता है। अंजीर फल मक्खियों को नियंत्रित करने के लिए, वयस्क मक्खियों को पकड़ने के लिए चिपचिपे जाल का उपयोग करना चाहिए, और लार्वा के फूटने से पहले फलों पर कीटनाशक छिड़कना चाहिए।

- मीलीबग एक और आम कीट है जो भारत में अंजीर के पेड़ों को प्रभावित करता है। ये कीट पेड़ के रस को खाते हैं और पत्तियों और फलों को काफी नुकसान पहुंचा सकते हैं। मीलीबग को नियंत्रित करने के लिए, पेड़ की पत्तियों और फलों पर कीटनाशकों का छिड़काव करना चाहिए। मीलीबग के संक्रमण का जल्द पता लगाने के लिए पेड़ की नियमित निगरानी भी आवश्यक है।
- स्केल कीट भी एक आम कीट है जो भारत में अंजीर के पेड़ों को प्रभावित करता है। ये कीट पेड़ की पत्तियों और फलों से चिपक जाते हैं और रस को खाते हैं। स्केल कीटों को नियंत्रित करने के लिए, पेड़ की पत्तियों और फलों पर कीटनाशकों का छिड़काव करना चाहिए। स्केल कीटों के संक्रमण का जल्द पता लगाने के लिए पेड़ की नियमित निगरानी भी आवश्यक है।

अंजीर की खेती में रोग नियंत्रण:

- अंजीर के पेड़ कई बीमारियों के प्रति भी संवेदनशील होते हैं जो पेड़ को काफी नुकसान पहुंचा सकते हैं और फलों की पैदावार को कम कर सकते हैं। भारत में अंजीर के पेड़ों को प्रभावित करने वाली सबसे आम बीमारियों में **जड़ सड़न, अंजीर का जंग और पत्ती का धब्बा शामिल हैं**।
- जड़ सड़न एक फफूंदजन्य रोग है जो अंजीर के पेड़ की जड़ों को प्रभावित करता है, जिससे वे सड़ जाते हैं। जड़ सड़न को नियंत्रित करने के लिए, किसानों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पेड़ के आस-पास की मिट्टी अच्छी तरह से सूखा हो और जलभराव न हो। उचित सिंचाई पद्धतियों का पालन किया जाना चाहिए, और किसी भी संक्रमित जड़ों को हटा दिया जाना चाहिए।
- अंजीर का जंग एक फफूंदजन्य रोग है जो अंजीर के पेड़ की पत्तियों को प्रभावित करता है, जिससे उन पर जंग के रंग के धब्बे विकसित होते हैं। अंजीर के जंग को नियंत्रित करने के लिए,पेड़ की पत्तियों पर फफूंदनाशकों का छिड़काव करना चाहिए। अंजीर के जंग का जल्दी पता लगाने के लिए पेड़ की नियमित निगरानी भी आवश्यक है।
- पत्ती धब्बा एक और फफूंदजन्य रोग है जो अंजीर के पेड़ की पत्तियों को प्रभावित करता है, जिससे उन पर धब्बे पड़ जाते हैं। पत्ती धब्बों

को नियंत्रित करने के लिए, पेड़ की पत्तियों पर फफूंदनाशकों का छिड़काव करना चाहिए। पत्ती धब्बों का जल्दी पता लगाने के लिए पेड़ की नियमित निगरानी भी आवश्यक है।

फलों की तुड़ाई

अंजीर के पौधों से फलों की तुड़ाई, फलों के पूरी तरह से पकने के बाद ही करनी चाहिए। क्योंकि इसके कच्चे फल को तोड़ने से फल अच्छी तरह से पकते नहीं है। जिसके कारण फलों की गुणवत्ता में कमी हो जाती है व फल आधे पके होने के कारण बाज़ार में अंजीर के फल का सही दाम नहीं मिल पाता, इसलिए इसके फलों को अच्छी तरह से पकने के बाद ही तोड़ना चाहिए।

उत्पादन और लाभ

अंजीर के पौधे का उत्पादन किस्मों के आधार पर अलग-अलग पैदावार प्रदान करते है। एक हेक्टेयर के खेत में लगभग 250 अंजीर के पौधों को लगाया जा सकता है तथा एक पौधे से लगभग 20 किलो अंजीर का फल प्राप्त होता है| अंजीर के फल गुणवत्ता के हिसाब से 500 रुपये से 800 रुपये प्रति किलो तक बिकता हैं, इस हिसाब से अंजीर की 1 हेक्टेयर खेती से सालाना 25 से 30 लाख रुपये तक आसानी से कमा सकते हैं।